जैन विद्या भाग 1 प्रश्नोत्तर

पाठ क्रमांक:-1 (नमस्कार महामंत्र)

1. नमस्कार महामंत्र को अर्थ सहित लिखो?

णमो अरिहंताणं- अरिहंतों को मेरा नमस्कार हो।
णमो सिद्धाणं- सिद्धों को मेरा नमस्कार हो।
णमो आयरियाणं- धर्माचार्यों को मेरा नमस्कार हो।
णमो उवज्झायाणं- उपाध्यायों को मेरा नमस्कार हो।
णमो लोए सव्व साहूणं- लोक के सब साधुओं को मेरा नमस्कार हो।

एसो पंच णमुक्कारो सव्व पावपणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं।।
अर्थ- यह नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला है और सब मंगलों में पहला मंगल है।

2. नमस्कार महामंत्र मे किन किन को नमस्कार किया गया है?

महान आत्माओं (अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु) को नमस्कार किया गया है।

3. नमस्कार महामंत्र के पद और अक्षर कितने है?

5 पद व 35 अक्षर।

4. नमस्कार महामंत्र का महत्व क्या है?

नमस्कार महामंत्र सब पापों का नाश करने वाला और सब मंगलों में पहला मंगल है।

5.खाली स्थान को पूरा करे -

(क) नमस्कार महामंत्र .....का नाश करने वाला है।

सब पापों

(ख) नमस्कार महामंत्र में महान्..... को नमस्कार किया गया है ।

आत्माओं

(ग) नमस्कार महामंत्र के पांचवें पद में .....अक्षर होते है ।

9

पाठ क्रमांक :-2 (वंदन पाठ)

1. वंदन पाठ शुद्ध लिखो?

तिक्खुत्तो

आयाहिणं

पयाहिणं

करेमि

वंदामि

नमंसामि

सक्कारेमि

सम्माणेमि

कल्लाणं

मंगलं

देवयं

चेइयं

पज्जुवासामि

मत्थएण वंदामि।

2. प्रदक्षिणा कैसे और कितनी बार करनी चाहिए?

प्रदक्षिणा नाभि से मस्तक तक तीन बार करनी चाहिए।

3. वंदना करने की विधि क्या है?

सर्वप्रथम हाथ जोड़कर नाभि से मस्तक तक दाईं से बाईं ओर तीन बार उठ बैठ कर प्रदक्षिणा दें। उसके बाद वंदन मुद्रा में बैठकर वंदामि से लेकर पज्जुवसामि तक पूरे पाठ का स्पष्ट उच्चारण करें। श्वास भरते हुए मत्थएण वंदामि बोलें और श्वास छोड़ते हुए मस्तक जमीन तक झुकाएं । यह क्रम तीन बार करने के पश्चात हाथ जोड़कर सुख साता पूछें। यही सम्मत्त वंदन विधि है |

खाली स्थान को पूरा करे-

(क) वंदना करने से मन.....होता है।

पवित्र

(ख) प्रदक्षिणा नाभि से .....तक.....बार दी जाती है।

मस्तक ; तीन

पाठ क्रमांक:-3 (सामायिक पाठ)

1. सामायिक पाठ को शुद्ध लिखो ?

करेमि भंते! सामाइयं
सावज्जं जोगं
पच्चक्खामि
जाव-नियमं
(मुहुत्तं एगं)
पज्जुवासामि
दुविहं तिविहेणं
न करेमि न कारवेमि
मणसा वयसा कायसा तस्स भंते !
पडिक्कमामि
निंदामि
गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि।

2. सामायिक में किस बात का त्याग किया जाता है ?

सावद्य योग का।

3. सामायिक का कालमान कितना होता है ?

48 मिनट (एक मुहुर्त)

4. सामायिक कितने करण- योग से की जाती है ?

2 करण 3 योग से

5. सामायिक के पांच अतिचार कौन-कौन से है?

1.मन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
2.वचन की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
3.शरीर की सावद्य प्रवृत्ति की हो।
4.सामायिक के नियमों का पूरा पालन न किया हो।
5.अवधि से पहले सामायिक को पूरा किया हो ।

6 करण और योग किसे कहते है?

करण-प्रयत्न विशेष 1. करना 2. कराना 3. अनुमोदन करना

योग-प्रवृति 1. मन 2. वचन 3. काय

पाठ क्रमांक 4 (मंगल पाठ)

1. चार मंगल कौन-कौन से है?

अरिहंत,सिद्ध,साधु तथा केवली भाषित धर्म।

2. मंगल पाठ शुद्ध लिखो?

चत्तारि मंगलं
अरहंता मंगलं
सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं
केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं

चत्तारि लोगुत्तमा

अरहंता लोगुत्तमा

सिद्धा लोगुत्तमा

साहू लोगुत्तमा
केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।

चत्तारि सरणं पवज्जामि

अरहंते सरणं पवज्जामि

सिद्धे सरणं पवज्जामि

साहू सरणं पवज्जामि
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

3. शरण किसकी लेनी चाहिए ?

अरिहंतो की, सिद्धों की,साधुओं की,केवली भाषित धर्म की।

4. लौकिक मंगल कौन-कौन से है?

नारियल, दूध, चावल आदि को लौकिक मंगल कहते हैं।

खाली स्थान को पूरा करे-

(क) मंगल पाठ .....मंत्र है।

शक्तिशाली

(ख) मंगल पाठ को..... मंत्र की तरह.....जाता है।

नमस्कार ; मन्त्र माना

(ग) प्रत्येक मांगलिक कार्य से पूर्व .....सुनना चाहिए।

मंगलपाठ

पाठ क्रमांक 5 (तीर्थंकर परम्परा)

1. तीर्थंकर किसे कहते है?

तीर्थ (साधु-साध्वी,श्रावक- श्राविका)की स्थापना करने वाले को तीर्थंकर कहते है।

2. सातवें ,आठवें तथा इक्कीसवें तीर्थंकर के नाम बताओ?

सुपार्श्वनाथ जी, चंद्रप्रभ जी, नमिनाथ जी।

3. चौबीस तीर्थंकर के नाम लिखो?

भगवान ऋषभदेव जी
भगवान अजितनाथ जी
भगवान संभवनाथ जी
भगवान अभिनंदननाथ जी
भगवान सुमतिनाथ जी
भगवान पद्मप्रभु जी
भगवान सुपार्श्वनाथ जी
भगवान चंद्रप्रभु जी
भगवान सुविधिनाथ जी
भगवान शीतलनाथ जी
भगवान श्रेयांसनाथ जी
भगवान वासुपूज्य प्रभु जी
भगवान विमलनाथ जी
भगवान अनंतनाथ जी
भगवान धर्मनाथ जी
भगवान शांतिनाथ जी
भगवान कुंथुनाथ जी
भगवान अरनाथ जी
भगवान मल्लिनाथ जी
भगवान मुनिसुव्रत नाथ जी
भगवान नमिनाथ जी

भगवान अरिष्टनेमिनाथजी
भगवान पार्श्वनाथ जी
भगवान महावीर प्रभु जी

4. शान्तिनाथ कौन से तीर्थंकर थे ?

सोलहवें

5. कुन्थुनाथ का नंबर कौन सा है?

सत्तरहवां

6. तीर्थंकर को अन्य किन नामो से पुकारा जाता है?

भगवान् , जिन ,अर्हत्, देवाधिदेव।

पाठ क्रमांक 6 (तेरापंथ की आचार्य परम्परा)

1. तेरापंथ के 11 आचार्यो के नाम बताओ?

आचार्य श्री भीखण जी
आचार्य श्री भारमल जी
आचार्य श्री रायचंद जी
आचार्य श्री जीतमल जी
आचार्य श्री मघराज जी
आचार्य श्री माणक लाल जी
आचार्य श्री डालचंद जी
आचार्य श्री कालूराम जी
आचार्य श्री तुलसी
आचार्य श्री महाप्रज्ञ
आचार्य श्री महाश्रमण

2. भगवान महावीर के निर्वाण के बाद गण का भार किसने संभाला?

सुधर्मा स्वामी ने

3. तेरापंथ के पांचवे आचार्य कौन थे ?

आचार्य श्री मघराज जी

4. तेरापंथ की स्थापना कहां व कब हुई?

वि.सं.1817 केलवा मे

पाठ क्रमांक 7 (परमेष्ठी वंदना)

1. परमेष्ठी वंदना मे किन किन को वंदना की गई है?

   परमेष्ठी वंदना में पंच परमेष्ठी (अरिहंत, सिद्ध आचार्य ,उपाध्याय, साधु) को वंदना की गई है ।

2. परमेष्ठी वंदना के दूसरे पद्य की तीसरी पंक्ति कौन सी है?

   दग्ध कर भव-बीज-अंकुर ,अरूज-अज अविकार हैं ।

3. 'साधना के शांत उपवन मे' .....पद को पूरा करो?

   द्वादशांगी के प्रवक्ता ज्ञान गरिमा पुंज हैं ,
   साधना के शांत उपवन में सुरम्य निकुंज हैं ।
   सूत्र के स्वाध्याय में संलग्न रहते हैं सदा,
   उपाध्याय महान् श्रुतधर धर्म शासन संपदा।

4. परमेष्ठी वंदना का तीसरा पद लिखो?

   णमो आयरियाणं-
   अमलतम आचार धारा में स्वयं निष्णात हैं ,
   दीप सम शत दीप दीपन के लिए प्रख्यात हैं ।
   धर्म शासन के धुरंधर धीर धर्माचार्य हैं ,
   प्रथम पद के प्रवर प्रतिनिधि प्रगति में अनिवार्य हैं ।

5. परमेष्ठी वंदना के रचनाकार का नाम बताओ?

   आचार्य श्री तुलसी

पाठ क्रमांक 9 (छात्र प्रतिज्ञा)

1. छात्र प्रतिज्ञा का पांचवा पद कौनसा है?

   मद्यपान में नहीं पड़ेंगे, भांग तंबाकू से न भिड़ेंगे ।
   बुरी आदतों (के) साथ लड़ेंगे, ईर्ष्या मत्सर मान मिटाएं ।

2. छात्र प्रतिज्ञा केअनुसार आदर्श छात्र मे कौन-कौन से गुण होने चाहिए ?

   छात्र प्रतिज्ञा के अनुसार एक आदर्श छात्र में निम्न गुण होने चाहिए:-
   उसका आचरण अच्छा होना चाहिए, संयमी होना चाहिए वह अनुशासन के नियम निभाए, झूठ न बोले, जुआ चोरी नहीं करें, उसमें बुरी आदत नहीं होनी चाहिए, वह आस्तिक होना चाहिए, वह त्यागी होना चाहिए, और उसकी अपने गुरु में श्रद्धा होनी चाहिए।

3. 'नही किसी से घृणा करेगे'-इससे सम्बंधित पद को पूरा लिखो?

नहीं किसी को गाली देंगे, नहीं किसी से घृणा करेंगे ।

बोल जबान नहीं बदलेंगे, पद लोलुपता नहीं सताएं ।

4. छात्र प्रतिज्ञा का दूसरा व चौथा पद लिखो?

(2) संयम झूले में झूलेंगे, तत्व अहिंसा को छू लेंगे ।

नहीं नम्रता को भूलेंगे, अनुशासन के नियम निभाएं ।

(4) झूठ कपट से सदा बचेंगे, जुआ चोरी नहीं रचेंगे ।

परनिंदा में नहीं पचेंगे ,आत्म विजय ही लक्ष्य बनाएं ।

पाठ क्रमांक 10 (संघ गान)

1. है अक्षुण्ण संघ मर्यादा से संबंधित पद पूरा करो।

दृढतर , सुंदर , संघ-संगठन , क्षीर-नीर सा यह एकीपन ।

है अक्षुण्ण संघ-मर्यादा , विनय और वात्सल्य अचल हो ।

2. संघ गान के चौथे पद की तीसरी पंक्ति लिखो।

श्रद्धा-भक्ति बहे नस नस में ।

3. संघ गान का तीसरा पद लिखो ।

संघ संपदा बढ़ती जाए, प्रगति शिखर पर चढ़ती जाए ।

भैक्षव शासन नंदन वन की ,सौरभ से सुरभित भूतल हो ।।

4. संघ गान के रचयिता कौन है?

संघगान के रचयिता आचार्य श्री तुलसी है।

पाठ क्रमांक 11 (सच्चे मानव)

1. तुम्हारा सबसे बड़ा शत्रु कौन है?

हमारा सबसे बड़ा शत्रु क्रोध है ।

2. तिलांजलि किसे देनी चाहिए?

तिलांजलि स्वार्थ भाव को देनी चाहिए ।

3. कविता के दो पद लिखो ।

क्रोध हमारा सबसे बढ़कर, दुश्मन उसको दूर भगायें।

क्षमा हमारा परम धर्म है, उसके खातिर प्राण लगायें ।

सच्चे मानव हम बन पायें ।।

मानव बनकर नहीं कभी हम, पशुता की गणना में आयें ।

बुद्धि ज्ञान विवेक तर्क को भारभूत हम नहीं बनायें ।

सच्चे मानव हम बन पायें ।।

4. हमारा परम धर्म क्या है?

क्षमा हमारा परम धर्म है ।

पाठ क्रमांक 12 (भगवान महावीर)

1. भगवान महावीर का जन्म कब और कहां हुआ?

भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को बिहार के वैशाली गणतंत्र में क्षत्रिय कुंडग्राम नामक नगर में हुआ।

2. भगवान महावीर के कितने नाम थे?

भगवान महावीर के 3 नाम थे - वर्धमान, महावीर, ज्ञात पुत्र।

3. भगवान के साधना काल का वर्णन करो ।

भगवान महावीर ने साढे बारह वर्ष तक साधना की। साधना के साथ साथ ध्यान भी करते थे। साधना काल में उन्होंने अनेक कष्ट सहे। कुछ लोग उन्हें चोर समझकर पीटने लग जाते थे संगम नामक देव ने भगवान को एक रात्रि में 20 बार मारणान्तिक कष्ट दिए। चंडकौशिक सर्प ने भी भीषण डंक लगाए भगवान ने सब कुछ सम्भाव से सहन किया वह क्षमाशूर थे।

4. भगवान को केवल ज्ञान कहां हुआ?

भगवान को केवल ज्ञान जम्भिय ग्राम में ऋजु बालिका नदी के पास शाल वृक्ष के नीचे हुआ।

5. दीपावली क्यों मनाई जाती है ?

भगवान का अंतिम चातुर्मास बिहार प्रांत के पावापुरी में था अंतिम अवस्था में भगवान ने 2 दिन का उपवास किया वह 2 दिन रात तक प्रवचन करते रहे कार्तिक कृष्णा अमावस्या की मध्य रात्रि में आपका निर्वाण हो गया उस दिन आप सभी बंधनों से मुक्त हो गए दीप जलाकर लोगों ने उत्सव मनाया यह उत्सव दीपावली के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

6. 11 पंडितों के कितने शिष्य थे ?

11 पंडितों के 4400 शिष्य थे ।

7. चतुर्विध तीर्थ का क्या अर्थ है?

साधु-साध्वी श्रावक-श्राविका आदि को चतुर्विध तीर्थ कहा जाता है ।

8. भगवान महावीर के साधनाकाल का वर्णन करते हुए कैवल्य-प्राप्ति को स्पष्ट कीजिए?

भगवान महावीर का साधना काल - भगवान महावीर ने अपनी साधना काल में अनेक कष्ट सहे। भगवान महावीर को बच्चे चोर समझकर पीटते,पत्थरों से मारते, चंडकौशिक सर्प ने तो भीषण डंक लगाये । संगम देव ने एक रात्रि में 20 मारणान्तिक कष्ट (मृत्यु हो जाए) दिए । भगवान ने सबकुछ समभाव से सहन कर उन्हें क्षमा कर दिया ।उन्होंने उपवास से लेकर छह माह तक की तपस्या निर्जल की | साधना काल में वे बहुत कम बोलते थे । वे 12 वर्ष और 13 पक्ष तक साधना करते रहे, वैशाख शुक्ला 10 के दिन जंभियग्राम, ऋजु बालिका नदी के किनारे शाल वृक्ष के नीचे गोदोहिका आसन मे ध्यान करते हुए दो दिन का उपवास में ज्ञान की पवित्रता बढी, मोह का आवरण हटा भगवान वीतराग बन गये ओर केवल ज्ञान को प्राप्त कर अरहंत बन गए ।

9. भगवान महावीर के जन्म से निर्वाण के मुख्य प्रसंग

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर थे ।

जन्म व परिवार:-

बिहार के वैशाली गणतंत्र में क्षत्रिय कुंडग्राम में राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर चैत्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन एक बालक का जन्म हुआ ,जिसका नाम वर्धमान रखा। भगवान महावीर के मुख्यतः तीन नाम थे। वर्धमान, ज्ञातपुत्र, और महावीर ।भगवान महावीर के बड़े भाई का नाम नंदीवर्धन ,बहन का नाम सुदर्शना ,पत्नी यशोदा, बेटी प्रियदर्शना थी। जिसका विवाह सुदर्शन के पुत्र जमाली से किया ।

शिक्षा व बचपन:-

भगवान महावीर बचपन से ही निर्भीक वृत्ति के थे। एक बार खेलते-खेलते सांप आ गया तो उन्होंने सांप को उठाकर फेंक दिया। और वापिस खेलने लगे । 8 वर्ष के जब वे शिक्षा के लिए गुरुकुल गए तब शिक्षकों ने कहा उनकी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है ।बचपन से ही तीन ज्ञान (मति,श्रुत,अवधि) के धनी थे ।

वैराग्य व दीक्षा:-

भगवान जब 28 वर्ष के हुए तब उनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया। उन्होंने बड़े भाई से श्रमण बनने की आज्ञा मांगी तो उन्होंने आज्ञा नहीं दी। उनके आग्रह से 2 साल तक ओर घर में श्रावकत्व का पालन करते हुए रहे। 30 वर्ष पूरे होते ही श्रमण बन गए।

साधना काल:-

भगवान महावीर ने 12 वर्ष 13 पक्ष तक साधना की। तपस्या के साथ-साथ ध्यान भी करते थे ।साधना काल में उन्होंने अनेक कष्ट सहे । चंडकौशिक सर्प ने भीषण डंक लगाए। संगम देव ने 20 मारणान्तिक कष्ट दिए ।फिर भी भगवान महावीर ने सब कुछ समभाव से सहन कर सबको क्षमा कर दिया।

केवल्य प्राप्ति:-

वैशाख शुक्ला 10 के दिन जंभियग्राम,ऋजुबालिका नदी के किनारे, शाल वृक्ष के नीचे ,गोदोहिका आसन में ज्ञान की पवित्रता बढी मोह का आवरण हटा और भगवान वीतराग हो गए।अर्थात् केवल ज्ञान प्राप्त हो गया ।

चतुर्विध तीर्थ की स्थापना:-

केवल्य प्राप्ति के पश्चात भगवान ने पहला प्रवचन संयम के महत्व पर देवों के बीच दिया ।दूसरा उपदेश पावापुरी में दिया जिसमें इंद्रभूति आदि 11 ब्राह्मण जाति के विद्वान ने अपने संदेहों को दूर किया और अपने 4400 शिष्यों के साथ भगवान के पास दीक्षित हो गए ।चंदनबाला आदि साध्वियां भी दीक्षित हुई और चतुर्विध धर्म संघ की स्थापना हुई। भगवान ने गण का भार गणधरों को और साध्वियों का भार साध्वी चंदनबाला को दिया।

निर्वाण:-

बिहार प्रांत के पावापुरी नगर में प्रवचन करते करते ही कार्तिक अमावस्या की रात्रि में सभी बंधनों से मुक्त हुए और भगवान का निर्वाण हो गया। दीप जलाकर लोगों ने उत्सव मनाया जो आज जैन मतावलंबी दीपावली के नाम से मनाते हैं।

10. भगवान महावीर का जीवन परिचय लिखे ?

भगवान महावीर 24वें तीर्थकर थे। वर्तमान में उनका शासनकाल चल रहा है।

जन्म,नाम एवं परिवार :-

भगवान महावीर का जन्म चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को क्षत्रिय कुंडग्राम नगर में हुआ। पिता का नाम सिद्धार्थ एवं माता का नाम त्रिशला था। भगवान के 3 नाम थे।वर्धमान, महावीर और सन्मति ।बड़े भाई का नाम नंदिवर्धन एवं बहन का नाम सुदर्शना था।

शिक्षा एवं दीक्षा :-

तीक्ष्ण बुद्धि के धनी होने के साथ-साथ बचपन से ही 3 ज्ञान मति ,श्रुत ,अवधि ज्ञान के धनी थे ।माता-पिता के आग्रह के कारण क्षत्रिय कन्या यशोदा के साथ विवाह किया। महावीर के एक पुत्री हुई जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया । माता पिता के स्वर्गवास होने के पश्चात तीन कठिन वचनो का पालन किया

1(रात्रि भोजन का त्याग)

2.(ब्रह्मचर्य व्रत का पालन)

3. (सचित्त जल का परित्याग)

30 वर्ष की अवस्था में दीक्षित हो गए ।

साधना काल:-

साधना काल में 20 मारणांतिक कष्टों को समता पूर्ण सहन किया। लंबी लंबी तपस्याओ के साथ जीवन यापन किया।

कैवल्य प्राप्ति:-

साढ़े 12 वर्ष की कठिन साधना के पश्चात वैशाख शुक्ला दसमी के दिन जंभियग्राम में ऋजुबालिका नदी के तट पर शाल वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त कर अरहंत बन गए।

तीर्थ की स्थापना :-

केवल ज्ञान के पश्चात भगवान का पहला प्रवचन देवों के बीच हुआ । दूसरा प्रवचन पावापुरी में हुआ । वहां पर 11 पंडित के साथ 4400 शिष्यों ने दीक्षा ग्रहण की । चंदनबाला आदि स्त्रियों को भी दीक्षित किया।

निर्वाण:-

भगवान महावीर का अंतिम प्रवास पावापुरी में बेले की तपस्या के साथ कार्तिक कृष्णा अमावस्या को निर्वाण के साथ संपन्न हुआ । वह दिन दीपमालिका के नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

पाठ क्रमांक 13 (श्रीमद् भिक्षु स्वामी)

1. भिक्षु स्वामी के जन्म का वर्ष और तिथि बताओ ।

   भिक्षु स्वामी का जन्म विक्रम संवत 1783 आषाढ शुक्ला त्रयोदशी को हुआ।

2. स्वामी जी की माता ने दीक्षा की अनुमति देने में हिचकिचाहट क्यों की?

   क्योंकि स्वामी जी जब गर्भ में थे तो उनकी माता ने सिंह का स्वप्न देखा था इस कारण वह सिंह की तरह पराक्रमी होगा | यह सोचकर माता ने दीक्षा की अनुमति नहीं दी ।

3. स्वामी जी ने दीक्षा किसके पास ली ?

   स्वामी जी ने दीक्षा स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य श्री रुघनाथ जी के पास ली ।

4. स्वामीजी स्थानकवासी संप्रदाय से पृथक कहां और कब हुए?

   स्वामी जी स्थानकवासी संप्रदाय से विक्रम संवत 1817 चैत्र शुक्ला 9 को बगड़ी में पृथक् हो गए ।

5. उल्लेखनीय संतों में कोई चार नाम बताओ।

   खेतसीजी, टोकर जी, हर नाथ जी,थिरपाल जी

6. आचार्य भिक्षु का जीवन संक्षेप में लिखो ।

आचार्य भिक्षु तेरापंथ धर्मसंघ के संस्थापक थे।

जन्म व परिवार :-

भिक्षु स्वामी का जन्म विक्रम संवत्1783 आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को कंटालिया में हुआ । पिता का नाम बल्लू जी व माता का नाम दीपां जी था। उनकी जाति ओसवाल व वंश संकलेचा था ।भीखणजी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनकी पत्नी भी धार्मिक विचारों से ओतप्रोत थी।

वैराग्य व दीक्षा:-

भीखणजी अपनी पत्नी का देहांत हो जाने पर दीक्षा लेने को तैयार हुए । लेकिन माता दीपांबाई ने दीक्षा की आज्ञा नहीं दी । तब स्थानकवासी संप्रदाय के आचार्य रुघनाथ जी वहां थे । उनके समझाने पर माता ने कहा जब भीखण गर्भ में था तब मैंने सिंह का स्वप्न देखा । इसलिए यह शेर जैसा पराक्रमी होगा। मैं इसे दीक्षा की आज्ञा कैसे दे दूं? तब आचार्य रुघनाथ जी ने कहा- बाई यह तो बहुत अच्छी बात है ।तेरा बेटा साधु बनकर सिंह की तरह गूंजेगा ।इस प्रकार समझाने पर माता ने राजी हो कर दीक्षा की आज्ञा देदी।विक्रम संवत 1808 मृगसिर कृष्णा 12 को बगड़ी में आचार्य रुघनाथजी के पास दीक्षा ले ली ।

स्थानकवासी संप्रदाय से पृथक्:-

विक्रम संवत् 1815 में भीखण जी के मस्तिष्क में साधु वर्ग की आचार विचार संबंधी शिथिलता के प्रति एक क्रांति की भावना पैदा हुई। तब भीखण जी ने आचार्य रुघनाथ जी को बताया । 2 वर्ष तक विचार विमर्श होने के बावजूद कोई संतोषजनक निर्णय नहीं होने से विक्रम संवत् 1817 चैत्र शुक्ला 9 को बगड़ी में उनसे पृथक् हो गए और अपना पहला पड़ाव गांव के बाहर श्मशान में जैतसिंह जी की छतरियों में किया ।

पुनः शास्त्रसम्मत दीक्षा:-

विक्रम संवत् 1817 आषाढ शुक्ल़ा पूर्णिमा को केलवा में पुनः शास्त्र सम्मत दीक्षा ग्रहण की। वि.सं. 1831 तक का समय भीखण जी के लिए अत्यंत संघर्षमय रहा ।

युवाचार्य की नियुक्ति:-

विक्रम संवत 1832 में अपने प्रमुख शिष्य भारमल जी को युवाचार्य पद दिया। कुछ संघीय मर्यादाओं का भी सूत्रपात किया ।

पहला पत्र 1832 मृगसिर कृष्णा 7 को लिखा ।

मुख्य साधु:-

भीखण जी के शासनकाल में 49 साधु और 56 साध्वियां दीक्षित हुई। जिनमें भारमल जी, मुनि थिरपाल जी ,फतेहचंद जी ,हरनाथ जी ,टोकर जी, खेतसीजी ,वेणीरामजी, हेमराज जी आदि साधु उल्लेखनीय हैं ।

महाप्रयाण:-

विक्रम संवत 1860 सिरियारी में भाद्रव शुक्ला त्रयोदशी के दिन 7 प्रहर के अनशन में 77 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक मृत्यु हो गई ।

पाठ क्रमांक 14 (आचार्य श्री तुलसी)

1. आचार्य श्री तुलसी का जन्म कहाँ और कब हुआ?

   आचार्य श्री तुलसी का जन्म विक्रम संवत 1971 कार्तिक शुक्ला द्वितीया को लाडनूं में हुआ।

2. मोहनलालजी ने आचार्य श्री तुलसी के वैराग्य की परीक्षा कैसे ली?

   आचार्य श्री तुलसी के बड़े भाई मोहनलाल जी ने बालक तुलसी को 100 रुपये का नोट देते हुए कहा- साधना में अनेक कष्ट आते हैँ ,तुम्हें जब भी इन रुपयों की आवश्यकता हो तब काम में ले लेना। यह तुम्हारे पढ़ने के कागजों में पड़ा रहेगा।तब बालक तुलसी ने कहा-भाईजी! यह तो परिग्रह है,साधु को परिग्रह रखना कल्पता नहीं।तब मोहनलालजी को विश्वास हो गया कि तुलसी का वैराग्य सच्चा है।

3. आचार्य श्री तुलसी को युवाचार्य पद कहाँ दिया गया?

   आचार्य श्री तुलसी को युवाचार्य पद विक्रम संवत 1993 भाद्रपद शुक्ला तीज को गंगापुर में दिया गया।

4. आचार्य श्री तुलसी ने किन-किन प्रान्तों की यात्रा की?

   आचार्य श्री तुलसी ने दिल्ली ,यूपी ,बिहार, बंगाल, पंजाब ,गुजरात, राजस्थान और दक्षिण के महाराष्ट्र आंध्र प्रदेश, कर्नाटक ,तमिलनाडु ,केरल आदि सभी प्रांतों की यात्रा की ।

5. दसवें आचार्य की घोषणा कब और कहाँ हुई?

   दसवें आचार्य की घोषणा विक्रम संवत 2050 सुजानगढ़ में हुई ।

6. अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्त्तन कब और कहाँ हुआ?

   अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन विक्रम संवत 2005 फाल्गुन शुक्ला द्वितीया (1 मार्च 1949) को सरदार शहर में आचार्य तुलसी ने किया ।

7. आचार्य श्री तुलसी का जीवन संक्षेप में लिखो ।

तेरापंथ धर्म संघ के नौवें अधिशास्ता आचार्य श्री तुलसी थे ।

उनका जीवन

जन्म एवं परिवार:-

विक्रम संवत 1971 कार्तिक शुक्ला द्वितीया को लाडनूं के खटेड़ परिवार में बालक तुलसी का जन्म हुआ। पिता का नाम झूमरमलजी तथा माता का नाम वदना जी था । 9 भाई बहनों में सबसे छोटे थे। बड़े भाई चंपालाल जी पहले ही दीक्षित हो गए थे।

वैराग्य भावना :-

बालक तुलसी के मन में बचपन से ही साधुचर्या व स्वाध्याय के प्रति अनुराग था । एक बार अष्टम आचार्य कालूगणी लाडनूं पधारे । उनके प्रवचन व व्यक्तित्व को देखकर ही बालक तुलसी में वैराग्य भावना प्रस्फुटित हो गई । यह बात अाकर तुलसी ने अपनी माता से भी कही लेकिन बाल स्वभाव समझकर उन्होंने टाल दिया ।जब धीरे धीरे वैराग्य और अधिक बढ़ने लगा तो कालू गणी ने दीक्षा की घोषणा कर दी। बड़े भाई ने वैराग्य की परीक्षा भी ली।बालक तुलसी सब में सफल हुए ।

दीक्षा:-

विक्रम संवत 1982 पौष कृष्णा पंचमी को बड़ी बहन लाडांजी के साथ आचार्य कालू गणी के कर कमलों से लाडनूं में दीक्षा हुई ।

युवाचार्य नियुक्ति:-

विक्रम संवत 1993 को गंगापुर में भाद्रव शुक्ला 3 को युवाचार्य का पद प्रदान किया गया। युवाचार्य काल 4 दिन का रहा ।

आचार्य पद:-

विक्रम संवत 1993 को भाद्रवशुक्ला 6 को गंगापुर मे आचार्य कालूगणी का स्वर्गवास हो गया । 22 वर्ष की अवस्था में आचार्य बन गए। आचार्य बनते ही शिक्षा का अत्यधिक प्रचार किया।

अणुव्रत आंदोलन:-

विक्रम संवत 2005 फाल्गुन शुक्ला 2 सरदारशहर में नैतिक उत्थान के लिए आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का सूत्रपात किया। इसे जन जन तक पहुंचाने के लिए अनेक प्रांतों की यात्रा की। इसकी परिसंपन्नता पर चतुर्विध धर्म संघ ने विक्रम संवत 2027 बीदासर में मर्यादा महोत्सव पर युगप्रधान की उपाधि से विभूषित किया।

कुशल वक्ता एवं साहित्य सृष्टा :-

आ .तुलसी की वकतृत्व कला अपूर्व थी। गंभीरतम विषय को सरल बना कर जनता के समक्ष प्रस्तुत करना ही मुख्य कार्य था। हिंदी ,संस्कृत, एवं राजस्थानी भाषा में उन्होंने कई ग्रंथ लिखे । जैन आगमों के संपादन का कार्य बखूबी किया।

युवाचार्य मनोनयन :-

आचार्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य युवाचार्य की नियुक्ति करना होता है । विक्रम संवत् 2035 राजलदेसर में मुनि नथमल को युवाचार्य पद प्रदान किया और उनका नाम परिवर्तित कर महाप्रज्ञ रखा।

आचार्य पद का परित्याग:-

विक्रम सं 2050 सुजानगढ मर्यादा महोत्सव पर अपना पद विसर्जन कर युवाचार्य महाप्रज्ञ ने दसवें आचार्य पद पर पदस्थ कर दिया । यह इतिहास की विरल घटना है। आचार्य महाप्रज्ञ इतिहास के इन दुर्लभ क्षणो में "गणाधिपति पद "पुज्य गुरुदेव आचार्य तुलसी को दिया।

अंतिम प्रवास व स्वर्गारोहण:-

गणाधिपति पुज्य गुरुदेव तुलसी ने चातुर्मास के लिए अंतिम प्रवास गंगाशहर किया । स्वास्थ्य लाभ के लिए 25 दिन बोथरा भवन रहे । विक्रम संवत 2054 आषाढ बदी तीज को 10:30 बजे लगभग तेरापंथ भवन लौटे। कुछ देर पश्चात अचानक ह्रदयगति रुक जाने से 83 वर्ष की अवस्था में संसार से महाप्रयाण हो गया। आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व और कर्तृत्व की विषद् रेखाएं आज भी जनमानस को प्रभावित करती है।

पाठ क्रमांक 15 (आचार्य श्री महाप्रज्ञ)

1. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जन्म कब और कहां हुआ ?

   आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का जन्म विक्रम संवत 1977 आषाढ़ कृष्णा त्रयोदशी 14 जून 1920 को झुंझुनू जिले के टमकोर ग्राम में हुआ।

2. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का आचार्य पदाभिषेक कहां और कब हुआ?

   आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का आचार्य पदाभिषेक दिल्ली में महरौली स्थित अध्यात्म साधना केंद्र में विक्रम संवत 2051 माघ शुक्ला षष्ठी 5 फरवरी 1995 को हुआ ।

3. आचार्य महाप्रज्ञ जी की दीक्षा किन के हाथों हुई?

   आचार्य महाप्रज्ञ जी की दीक्षा आचार्य श्री कालू गणी के हाथों हुई ।

4. आचार्य महाप्रज्ञ की दीक्षा कब व कहां हुई?

आचार्य महाप्रज्ञ जी की दीक्षा विक्रम संवत 1987 माघ शुक्ला दशमी, 10 फरवरी 1931 को सरदार शहर में हुई ।

5. आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी महाप्रयाण कहां हुआ?

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का महाप्रयाण सरदार शहर में हुआ ।

6. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के जीवन की विशेषताओं का उल्लेख करो।

तेरापंथ के दशम अधिशास्त्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ की अनेक विशेषताएं हैं । उनके जीवन के चतुर्मुखी विकास का श्रेय एक मात्र आचार्य श्री तुलसी को जाता है । महाप्रज्ञ जी के जीवन की कुछ विशेषताएं इस प्रकार है :-

आचार्य महाप्रज्ञ विविध रूप व्यक्तित्व के धनी थे। इनका एक रूप योगी का तो दूसरा रूप ध्यानी का एक रूप मुनि का तो दूसरा रूप मनस्वी का,एक गुरु का था तो दूसरा रूप अनुशास्ता का था । इन्होंने समाज में मौलिक साहित्य स्रष्टा और अन्वेषक के रूप में अपनी पहचान बनाई।

1. आचार्य महाप्रज्ञ संस्कृत के आशु कवि थे । वे हिंदी,प्राकृत और,संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ थे । अनेक विश्वविद्यालयों में इस क्षेत्र में गहरी छाप छोड़ी है ।

2.मौलिक चिंतक,लेखक और कुशल प्रवक्ता थे । दर्शन,योग,न्याय,अध्यात्म और जैन तत्वों पर 300 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित कर लोगों को लाभांवित किया है ।

3. आगम संपादन करने का एक मात्र श्रेय भी इनको ही जाता है । आचारांग पर संस्कृत में भाष्य लिखकर इतिहास को दोहराया है ।

4. प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान के कई सूत्रों को उजागर कर पूरे विश्व को अमूल्य उपहार भेंट किया है ।

5. अहिंसा,विश्वशांति एवं नैतिकता के क्षेत्र में "अहिंसा समवाय मंच" की अवधारणा प्रस्तुत की ।

6. राष्ट्रपति अब्दुल कलाम और आपने मिलकर "सुखी परिवार और समृद्ध राष्ट्र" नामक बहुप्रशंसित पुस्तक लिखी ।

7. इंदिरा गांधी एकता पुरस्कार एवं अनेक सम्मान से आप को सम्मानित किया गया है ।

आप का संपूर्ण जीवन श्रद्धा और समर्पण का दस्तावेज रहा है ।

7. आचार्य श्री महाप्रज्ञ का जीवन परिचय लिखो।

तेरापंथ घर्मसंघ के 10 वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ थे ।

जन्म एवं माता-पिता

बालक नथमल का जन्म 14 जुन 1920 जिला झुंझनु (राजस्थान) के टमकोर में हुआ। माता का नाम बालुजी एवं पिता का नाम तोलाराम जी चौरड़िया था ।

दीक्षा एवं शिक्षा -

बालक नथमल की दीक्षा अष्टमाचार्य पूज्य कालुगणी के करकमलो से हुई।
आपकी शिक्षा का दायित्व मुनि तुलसी को सौंपा गया । धीरे- धीरे आप मेधावी मुनियों की श्रेणी मे आ गये और अग्रगण्य बनाकर चातुर्मास के लिए भेजा गया । उसके बाद साझपति , निकाय सचिव एंव महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया।

आपकी प्रतिभा ने आचार्य पद को सुशोभित किया । आचार्य श्री तुलसी ने 5 फरवरी 1995 को आचार्य पद विसर्जन कर आपको आचार्य पद पर आसीन किया । आचार्य महाप्रज्ञ जी ने आचार्य तुलसी को गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का संबोधन दिया यह एक अभूतपूर्व घटना थी।

महाप्रज्ञ के अवदान :-

आप हिंदी प्राकृत और संस्कृत भाषा के विशेषज्ञ थे । आप मौलिक चिंतक, लेखक और कुशल प्रवक्ता थे । आगम संपादन का विशेष कार्य आपने किया । प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान आप की ही देन है। अहिंसा समवाय मंच की अवधारणा प्रस्तुत की। राष्ट्रपति अब्दुल कलाम और आप ने मिलकर सुखी परिवार समृद्ध राष्ट्र नामक पुस्तक लिखी।

पुरस्कार:-

मानव जाति की सेवा हेतु इंदिरा गांधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार ,धर्म चक्रवर्ती ,लोक मूर्ति एवं राष्ट्रीय संप्रदायिक समुदाय पुरस्कार आदि से सम्मानित किया गया।

देवलोक गमन :

9 मई 2010 के दिन इस महासूर्य ने अंतिम सांस ली। 90 वर्ष की अवस्था तक अपना संपूर्ण जीवन धर्म संघ की प्रगति में लगा दिया वह महानायक आज जन जन के मन में एक छाप छोड़ चुका है।

पाठ क्रमांक 16 (आचार्य महाश्रमण)

1. आचार्य श्री महाश्रमण जी का संक्षिप्त में परिचय प्रस्तुत करें ।

वर्तमान समय में आचार्य महाश्रमण जी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ चल रहा है । 11वें अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी का संक्षिप्त जीवन परिचय:-

जन्म व परिवार :-

चुरू जिले के सरदारशहर में 13 मई 1962 के दिन झूमर मल जी दुगड़ के प्रांगण में माता नेमादेवी की कुक्षि से एक अनाम शिशु का जन्म हुआ, जिसका नाम मोहन रखा गया ।

विशेषताएं :-

बालक मोहन बचपन से ही मेधावी श्रमशील व कार्यनिष्ठ विद्यार्थी थे । इनके साथ साथ विनम्रता भद्रता ,ऋजुता,मृदुता व पापभीरुता भीरुता इनके जीवन की मुख्य विशेषताएं थी।

वैराग्य भावना व दीक्षा:-

बालक मोहन 7 वर्ष की अवस्था में ही पितृ वात्सल्य से वंचित हो गए तब उनके मन में वैराग्य की भावना प्रस्फुटित हुई । उन्होंने दिल्ली जाकर आचार्य श्री तुलसी के समक्ष जाकर अपनी वैराग्य भावना प्रस्तुत की । तब आचार्य श्री ने मुनि सुमेरमल जी 'लाडनूं' को उन्हें दीक्षा देने कीअनुमति प्रदान की । 5 मई 1974 सरदारशहर में रविवार के दिन 12 वर्ष की अवस्था में दीक्षा लेकर मोहन से मुनि मुदित बन गए ।

विभिन्न पदों पर प्रतिष्ठित

A.**अंतरंग सहयोगी:-**

विक्रम संवत 2042 उदयपुर में आचार्य तुलसी ने इन्हें युवाचार्य महाप्रज्ञ का अंतरंग सहयोगी घोषित किया।

B. **साझपति:-**

विक्रम संवत 2043 को ब्यावर में आचार्य तुलसी ने अक्षय तृतीया के अवसर पर इन्हें सझपति नियुक्त किया ।

C. **महाश्रमण पद:-**

विक्रम संवत 2046 आचार्य श्री तुलसी ने लाडनूं में मुनि मुदित को महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित किया ।

D.**युवाचार्य पद:-**

विक्रम संवत 2054 ,गंगा शहर में आचार्य महाप्रज्ञ जी ने स्वयं पछेवडी धारण कर बाद में वही पछेवडी महाश्रमण जी को ओढ़ाकर इन्हें युवाचार्य महाश्रमण घोषित कर दिया ।

E.आचार्य पदाभिषेक:-

विक्रम संवत 2067 में आचार्य महाप्रज्ञ का सरदार शहर में अचानक महाप्रयाण हो गया। तब सरदार शहर के गांधी विद्या मंदिर के विशाल प्रांगण में ग्यारहवें अनुशास्ता के रूप में आचार्य महाश्रमण का पदाभिषेक हुआ । मुनि सुमेरमल जी सुदर्शन ने पछेवडी ओढाई। मुनि सुखलाल जी ने अभिनंदन पत्र का वाचन किया । सभी साधु साध्वियों ने आचार्यवर को भेंट दी । इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न पदाधिकारी व राजनीतिज्ञ भी मौजूद थे। वर्तमान में आचार्य महाश्रमण तेरापंथ धर्म संघ को उच्चता की ओर ले जाकर धर्म का प्रचार-प्रसार अहिंसा यात्रा के दौरान कर रहे हैं।

2. शुभ भविष्य का संकेत को स्पष्ट करें ।

विक्रम संवत 2051 माघ शुक्ला सप्तमी महानगरी दिल्ली में गुरुदेव तुलसी ने मुनि मुदित को पुनः महाश्रमण पद पर प्रतिष्ठित करते हुए नियुक्ति पत्र में लिखा महाश्रमण मुनि मुदित कुमार आचार्य महाप्रज्ञ के गण संचालन के कार्य में सतत् सहयोगी रहे तथा स्वयं गण संचालन की योग्यता विकसित करें । इसके लिए अवशेष जो करनीय है वह उचित समय पर आचार्य महाप्रज्ञ जी करेंगे ।
विज्ञजनों की दृष्टि में यह शुभ भविष्य का स्पष्ट संकेत था।

3. आचार्य श्री महाश्रमण की दीक्षा कब हुई थी ?

आचार्य श्री महाश्रमण जी की दीक्षा विक्रम संवत 2031 वैशाख शुक्ल चतुर्दशी 5 मई 1974 रविवार के दिन हुई।

4. आचार्य श्री महाश्रमण के माता पिता का क्या नाम था?

आचार्य श्री महाश्रमण जी के पिता का नाम झूमरमल जी दुगड़ व माता का नाम नेमा देवी था।

पाठ क्रमांक 17 (जैन धर्म)

1. जिन किसे कहते हैं?

जिन उस आत्मा का नाम है जिसने राग द्वेष को जीतकर वीतराग अवस्था को प्राप्त कर लिया है ।

2. क्या जैन धर्म जातिवाद को मानता है ?

नहीं जैन धर्म जातिवाद को नहीं मानता है ।

3. क्या जैन धर्म ईश्वर को संसार का कर्त्ता हर्त्ता मानता है ?

नहीं जैन धर्म ईश्वर को संसार का कर्त्ता हर्त्ता नहीं मानता है ।

4. क्या जैन धर्म पुनर्जन्म को मानता है ?

हां जैन धर्म पुनर्जन्म को मानता है ।

5. भगवान के 11 गणधर किस जाति के थे?

भगवान के 11 गणधर ब्राह्मण जाति के थे।

6. जैन धर्म के आदिकर्त्ता कौन हैं?

जैन धर्म के आदि कर्त्ता भगवान ऋषभदेव हैं।

7. हरिकेशी मुनि की क्या जाति थी ?

हरिकेशी मुनि जाति से चांडाल थे।

पाठ क्रमांक 18 (तेरापंथ)

1. तेरापंथ के संस्थापक कौन थे?

तेरापंथ के संस्थापक आचार्य श्री भिक्षु थे।

2. तेरापंथ नाम कहां और किस कारण हुआ?

तेरापंथ नाम जोधपुर में 13 श्रावकों की संख्या को देखकर सेवक जाति के द्वारा रचित दोहे के कारण हुआ।

3. तेरह नियमो के नाम बताओ।

तेरापंथ के 13 नियम

5 महाव्रत

1.अहिंसा 2.सत्य 3.अस्तेय 4.ब्रह्मचर्य 5.अपरिग्रह

5 समिति

1.ईर्या समिति 2.भाषा समिति 3.एषणा समिति 4.आदान निक्षेप समिति 5.परिष्ठापन समिति

3 गुप्ति

1.मनो गुप्ति 2.वाक् गुप्ति 3.काय गुप्ति

4. एषणा समिति का अर्थ बताओ।

शुद्ध आहार पानी की गवेषणा करना।

5. वाणी का संयम करना कौनसी गुप्ति है?

वाक्गुप्ति

रिक्त स्थान की पूर्ति करो

A) आचार्य भिक्षु.....संप्रदाय में दीक्षित हुए।

स्थानकवासी

B) आचार्य भिक्षु.....अलग हुए तब.....साधु थे।

स्थानकवासी संप्रदाय से 5

पाठ क्रमांक 19 (प्रभात कार्य)

1. साधुओं के दर्शन से क्या लाभ होता है ?

1.दिल में संयम की भावना उत्पन्न होती है।

2.उनके शुद्ध आचरण को देखने को मिलते हैं।

3 मानसिक विचार पवित्र बनते हैं।

4.उनके दर्शन करने से मन को शांति मिलती है।

5.सदाचार सीखने को मिलता है।

2. हाथ के बिस्वोंपर कितनी बार जप करने से नवकरवाली होती है?

हाथ के बिस्वों पर 9 बार जप करने से नवकरवाली होती है।

3. सामायिक से क्या लाभ होता है?

सामायिक के लाभ-
सामायिक करने से समता की अनुभूति होती है।
48 मिनट के लिए सांसारिक झंझटों से दूर रहकर ज्ञान ध्यान स्वाध्याय करने से मन में शांति मिलती है।
स्वयं के आचरण में भी सुधार होता है।
जीवन को सुखमय व आनंदमय बनाने के लिए संयम व समता आवश्यक है जो सामायिक से संभव है।
निरवद्य कार्य करना और स्वाध्याय करने का अवसर भी सामायिक से मिलता है।
मनुष्य जन्म की सार्थकता सिद्ध होती है।

पाठ क्रमांक 20 (देव गुरु धर्म)

1. देव का स्वरुप क्या है ?

देव राग द्वेष रहित वीतराग अर्थात् समदर्शी होते हैं।
वे यथावस्थित तत्त्वों का उपदेश करते हैं और सत्य धर्म का प्रवर्तन करते हैं।

2. गुरु के लक्षण बताइए।

पांच महाव्रतों का पालन करने वाले साधु को गुरु कहते हैं।

3. धर्म का स्वरूप क्या है? उसके उपाय कौन-कौन से हैं ?

आत्मशुद्धि साधनं धर्म जिन उपायों से आत्मा की शुद्धि होती है उनको धर्म कहते हैं।वे उपाय हैं- संवर और निर्जरा

4. अरहंत किसे कहते हैं ?

चार घनघाती कर्म (ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय ,मोहनीय एवं अंतराय) को क्षीण कर जिन्होंने केवल ज्ञान प्राप्त कर चतुर्विध तीर्थ की स्थापना की है वे अरहंत कहलाते हैं ।

पाठ क्रमांक 21 (6 काय के जीव)

1. छः काय के जीवों के अलग अलग नाम बताओ।

छः काय के जीवों के नाम~

पृथ्वी काय

अप्काय

तेजस्काय

वायु काय

वनस्पतिकाय

त्रसकाय

2. पृथ्वी काय में कौन सी वस्तुएं आती है?

लोहा ,तांबा, कोयला ,मिट्टी ,पत्थर, सोना ,चांदी आदि सभी वस्तुएं पृथ्वीकाय में आती है ।

3. पानी किस काय के जीवों का शरीर है ?

पानी अप्काय के जीवों का शरीर है ।

4. त्रसकाय में कौन-कौन से जीव आते हैं ?

दो ,तीन ,चार तथा पांच इंद्रियां वाले सभी जीव त्रसकाय में आते हैँ ।

5. त्रसकाय का अर्थ समझाओ।

जो जीव सुख की इच्छा से तथा दु:ख से दूर होने के लिए इधर उधर आ जा सकते हैं ,सिकुड़ते हैं, भयभीत होते हैं ,शब्द करते हैं ,वह सब त्रसकाय हैं । दो ,तीन, चार तथा पांच इंद्रियों वाले सभी जीव त्रसकाय कहलाते हैं।

6. छह काय का अर्थ समझाते हुए उनके जीवों के नाम लिखिए?

काय - काय का अर्थ है-शरीर । काय 6 हैँ ।

1.पृथ्वी काय- जिन जीवों का शरीर पृथ्वी, मिट्टी आदि है, वे पृथ्वी काय है ! जैसे सोना ,चांदी, कोयला आदि ।

2. अप्काय - जिन जीवों का शरीर पानी है वह अप्काय है ।जैसे बरसात का जल, ओस की बूंद आदि।

3. तेजस् काय -अग्नि आदि ही जिनका शरीर है उन्हें तेजस् काय कहते हैं । जैसे:- गैस की अग्नि, आदि।

4. वायु काय - हवा आदि शरीर वाले जीव वायु काय है। जैसे:-ठंडी पवन आदि।

5. वनस्पति काय: -वनस्पति जिनका शरीर है वह वनस्पति काय है। जैसे -पेड़ पौधे, बीज अंकुर आदि ।

6. त्रस काय - जो जीव सुख की इच्छा से तथा दुःख से दूर होने के लिए इधर उधर आ जा सकते हैँ, सिकुड़ते हैं, अर्थात हलन चलन करते हैं उन्हें त्रसकाय कहते है। जैसे कृमि, चींटी, मनुष्य, हाथी आदि द्वीन्द्रिय ,त्रीन्द्रीय ,चतुरेन्द्रिय एवं पंचेंद्रिय जीव त्रस काय मे आते हैं।

पाठ क्रमांक 22 (सावद्य-निरवद्य)

1. सामायिक और साधुपन में क्या अंतर है ?

सामायिक व साधुपन में अंतर

1.सामायिक का कालमान 48 मिनट का होता है जबकि साधुपन का कालमान नहीं होता वह यावज्जीवन के लिए होता है।

2. सामायिक में 48 मिनट के लिए ही सावद्य योग का त्याग कर निरवद्य कार्य किया जाता है जबकि साधु पन में संपूर्ण जीवन के लिए सावद्य योग का त्याग कर निरवद्य कार्य किया जाता है ।जैसे -अहिंसा, सत्य, अस्तेय,ब्रहमचर्य, अपरिग्रह का पालन करना।

3. सामायिक में 48 मिनट के लिए खाने पीने का त्याग किया जाता है जबकि साधुपन में आहार पानी खुला रहता है।

4. सामायिक में 48 मिनट के लिए ही व्यक्ति संयम की साधना कर सकता है जबकि साधुपन में साधु साध्वी अपना संपूर्ण जीवन संयम की साधना में ही लगा देते हैं।

5.सामायिक 2 करण 3 योग से की जाती है।जबकि साधूपन 3 करण 3 योग से किया जाता है।

2. सामायिक में कौन-कौन से काम नहीं करने चाहिए?

सामायिक में सावद्य कार्य जैसे- हिंसा करना, झूठ बोलना, चोरी करना, व्यापार करना आदि नहीं करने चाहिए।

3. सावद्य निरवद्य का अर्थ समझाओ ।

सावद्य:-

सावद्य का अर्थ है पाप सहित कार्य। जो काम पाप सहित होते हैं वह सब सावद्य हैं। जैसे- हिंसा करना झूठ बोलना आदि

निरवद्य:-

निरवद्य का अर्थ है- पापरहित कार्य । जिन कार्यों को करने में पाप नहीं होता वह सभी निरवद्य है। जैसे- अहिंसा ,सत्य,अस्तेय ,ब्रह्मचर्य ,अपरिग्रह का पालन करना।

4.. सामायिक कितने मिनट की होती है ?

सामायिक 48 मिनट (एक मुहूर्त) की होती है ।

5. सामायिक से क्या लाभ होता है?

सामायिक के लाभ-

सामायिक करने से समता की अनुभूति होती है ।

48 मिनट के लिए सांसारिक झंझटों से दूर रहकर ज्ञान ध्यान स्वाध्याय करने से मन में शांति मिलती है |

स्वयं के आचरण में भी सुधार होता है ।

जीवन को सुखमय व आनंदमय बनाने के लिए संयम व समता आवश्यक है जो सामायिक से संभव है |

निरवद्य कार्य करना और स्वाध्याय करने का अवसर भी सामायिक से मिलता है ।

मनुष्य जन्म की सार्थकता सिद्ध होती है ।

पाठ क्रमांक 23 (इन्द्रियां)

1. घ्राण इंद्रिय किसे कहते हैं ? उससे क्या जाना जाता है ?

जिस इंद्रिय के द्वारा सुंघकर हम वस्तु का ज्ञान करते हैं उसे घ्राण इंद्रिय कहते हैं ।

2. रूप को जानने वाली कौन सी इंद्रिय है ?

चक्षु इंद्रिय

3. गर्मी और ठंडक का बोध किस इंद्रिय से होता है?

स्पर्शन् इंद्रिय

4. चार इंद्रिय वाले जीवो के नाम बताओ।

मक्खी ,मच्छर ,भौरा, टिड्डी ,कसारी ,बिच्छू आदि ।

5. एक इंद्रिय में कितनी काय के जीव आते हैं?

एक इंद्रिय मे 5 काय के जीव आते हैं ।

पाठ क्रमांक 24 (वसुमती 1)

1. मां ने अपने साथ मुंहपति क्यों ली?

   क्योंकि खुले मुंह बोलने से हवा के जीव मरने की संभावना रहती है इसलिए मां ने अपने साथ मुहंपती ली ।

2. वसुमती ने माता से क्या सीखा ?

   वसुमती ने माता से नमस्कार महामंत्र सीखा ।

3. साध्वियों के दर्शन से क्या लाभ ?

   साध्वियों के दर्शन से मन को शांति मिलती है व सदाचार सीखने को मिलता है ।

पाठ क्रमांक 25 (वसुमती 2)

1. माता ने वसुमती को व्याख्यान में जाने से क्यों रोका?

   क्योंकि वसुमति छोटी बालिका थी । वह एक डेढ़- घंटे तक एक जगह जमकर बैठ नहीं सकती और ना ही धूम किए बिना रह सकती । इसलिए मां ने वसुमति को व्याख्यान में जाने से रोका ।

2. माता ने गुलाब के फूल को अलग क्यों रखवाया?

   माता ने वसुमति से गुलाब का फूल अलग रखने के लिए इसलिए कहा क्योंकि गुलाब का फूल सचित्त अर्थात् जीव सहित होता है । सचित्त वस्तु के जीवों को छूने मात्र से ही कष्ट होता है । इसलिए साधु साध्वी इनको कभी नहीं छूते और न ही हमें उस स्थान पर सचित्त वस्तु ले जानी चाहिए क्योंकि सचित्त वस्तु को पास रख कर हम साधु साध्वियों के चरण भी नहीं छू सकते।

3. सामायिक में पुंजनी क्यों रखी जाती है ?

   सामायिक में पुंजनी इसलिए रखी जाती है क्योंकि रात के समय जब चलना फिरना पड़ता है तब इससे पुंज-पुंजकर चलते हैं और दिन में भी यदि कोई जीव जंतु पास आ जाते हैं तो उन्हें इससे अलग कर देते हैं जिससे उनको कष्ट ना हो ।

4. वसुमती ने व्याख्यान से क्या सीखा?

   वसुमति ने व्याख्यान से नमस्कार महा मंत्र के पांचों पदो का महत्व जाना ।

5. सचित्त व अचित्त में अंतर बताओ।

   सचित्त-जीव सहित वस्तु सचित्त है। जिसमें जीव हो,प्राण हो,उसे सचित्त कहते हैँ।सचित्त अर्थात् सजीव जैसे-साधारण नमक,कच्चा पानी,अग्नि ,वायु ,वनस्पति आदि सब सचित्त है।

   अचित्त-जीव रहित वस्तु अचित्त है।जिसमें जीव न हो,जो प्राणविहीन हो,उसे अचित्त कहते हैँ।अचित्त अर्थात् निर्जीव।जैसे गर्म किया हुआ नमक,उबला हुआ पानी या चुने तथा

राख मिला हुआ धोवन पानी,उबले फल सब्जी,बीज तथा छिलके निकले फल,फलों का रस,मिठाई,नमकीन,पकाया हुआ खाना,काजू,किसमिस,लौंग इत्यादि।

पाठ क्रमांक 26 (विनय)

1. श्यामा मां को क्यों अच्छी लगती है ?

क्योंकि श्यामा अपनी मां का सदैव कहना मानती । दोनों वक्त बड़ों को प्रणाम करती । संत सतियों के नियमित दर्शन करती तथा रास्ते में मिलने पर उन्हें वंदना करती | किसी से लड़ाई झगड़ा नहीं करती । सबसे मेलजोल रखती इसलिए मां को श्यामा अच्छी लगती है ।

2. नीला मां को क्यों अच्छी नहीं लगती ?

क्योंकि नीला मां का कहना नहीं मानती और ना ही कोई काम ठीक से करती । सबको तड़ाके से जवाब देती ,पढ़ाई नहीं करती, सारे दिन इधर-उधर घूमती रहती । इसलिए वह मां को अच्छी नहीं लगती ।

3. साधु साध्वियों के घर आने पर क्या करना चाहिए ?

साधु साध्वी घर आए तो खड़े होना चाहिए, सिर झुका हाथ जोड़कर वंदना करनी चाहिए ।

पाठ क्रमांक 27 (क्रोध को क्षमा से शांत करो)

11. चंडकौशिक की कहानी संक्षेप में लिखो।

प्राचीन समय में कनकखल नाम का आश्रम था।उसका कुलपति चंडकौशिक बहुत ही क्रोधी स्वभाव का था । एक समय कुछ राजकुमार उसके आश्रम में फल फूल तोड़ने आए तो वह उनके पीछे दौड़ा। पैर फिसल जाने के कारण तत्काल उसकी मृत्यु हो गई और वह उसी आश्रम में सर्प के रूप में उत्पन्न हुआ। उसे अपने आश्रम में किसी का आना जाना पसंद नहीं था ।कोई व्यक्ति आता तो उसे डंक लगाकर वही खत्म कर देता। एक बार भगवान महावीर साधना करने उसी जंगल में पहुंचे।चंडकोशिक ने उन्हें तीन बार डंक लगाने का प्रयत्न किया लेकिन भगवान महावीर अपनी साधना में अटल रहे ।चौथी बार पैर में डंक लगाया तो उनके खून निकलने लगा ।वह खून जब सर्प ने चूसा तो दूध जैसा लगा तो विषधर ने सोचा :- आज तक मेरा प्रहार खाली नहीं गया ,आज कैसे ?चिंतन करते करते उसे जाति स्मरण ज्ञान हुआ और उसने भगवान महावीर को जाना ।भगवान ने अपनी आंखें खोली और प्रेम भाव से सर्प को देखते हुए बोले विषधर क्रोध का फल तुमने देख लिया अब जागृत हो जाओ और सब के प्रति समभाव रखो क्रोध को प्रेम में बदल डालो महावीर की क्षमादान भरी अमृतवाणी को सुनकर चंडकौशिक सदा के लिए शांत बन गया । इससे स्पष्ट होता है कि क्रोध को क्षमा के द्वारा ही जीता जा सकता है ।

12. भगवान महावीर ने सर्प से क्या कहा ?

भगवान महावीर ने सर्प से कहा विषधर क्रोध का फल तुमने देख लिया। क्रोध के कारण तुमको कितने कष्ट झेलने पड़े? अब जागृत हो जाओ सब जीवों के प्रति समभाव रखो और अपने क्रोध को प्रेम में बदल डालो ।

13. क्रोध को कैसे जीता जा सकता है ?

क्रोध को क्षमा के द्वारा जीता जा सकता है।

14. आश्रम का नाम क्या था ?

आश्रम का नाम कनकखल था ।

15. चंडकौशिक पूर्व जन्म में क्या था ?

चंडकौशिक पूर्व जन्म में कनकखल नाम के आश्रम का कुलपति था ।

पाठ क्रमांक 28 (पाप से डरो)

1. नारद को एकांत स्थान क्यों नहीं मिला ?

नारद को एकांत स्थान इसलिए नहीं मिला क्योंकि परमात्मा सभी जगह उपस्थित होते हैं।

2. उपाध्याय की परीक्षा में वसु और पर्वत क्यों असफल रहे ?

उपाध्याय की परीक्षा में वसु और पर्वत इसलिए असफल रहे क्योंकि वे अंधेरी गुफा में जाकर अपने अपने मुर्गो को मार आए थे परंतु सृष्टि में ऐसा कोई स्थान नहीं जहां कोई ना देखता हो ।

3. नरक गामी कौन होता है?

किसी को जो व्यक्ति मारने में संकोच नहीं करता वह नरक गामी होता है ।

4. पाप से डरो कहानी को अपने शब्दों में लिखो।

एक गांव में क्षीरकदम्ब नाम के उपाध्याय रहते थे। उनके पास राजनगर का राजकुमार वसु ,उनका स्वयं का पुत्र पर्वत और ब्राह्मण पुत्र नारद 3 बालक पढ़ते थे । एक दिन कई साधु आपस में बातचीत कर रहे थे की इन बालकों में दो तो नरक गामी और एक स्वर्ग गामी होगा । उपाध्याय ने यह बात सुनली। अपने शिष्यों की परीक्षा के लिए उन्होंने आटे के तीन मुर्गे बनाए, जो बिल्कुल असली जैसे दिखते थे और अपने शिष्यों से कहा- तुम तीनों एक एक मुर्गा ले जाओ और इन्हें ऐसी जगह मारना जहां कोई नहीं देखता हो। वसु और पर्वत ने एक अंधेरी गुफा में जाकर मुर्गे को मार दिया लेकिन नारद मुर्गे को लेकर वापस आ गया। नारद के हाथ में मुर्गा देखकर उपाध्याय जी ने पूछा- तुमने मेरा आदेश क्यों नहीं माना? तो नारद ने कहा मैंने तो आपके ही आदेश का पालन किया। मुझे ऐसा कोई स्थान नहीं मिला जहां कोई नहीं देखता हो। उपाध्याय ने कहा शायद तुम कहीं गए नहीं होंगे । नारद ने कहा - मैं बहुत दूर घने जंगल में गया। वहां ज्योंही मुर्गे को

मारने लगा तब मुझे याद आया कि परमात्मा तो मुझे देख रहे हैं तब मैंने सोच लिया कि अब ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां कोई नहीं देखता हो और मैं मुर्गे को वापस लेकर आ गया।

इस परीक्षा से उपाध्याय ने जान लिया कि वसु व पर्वत की दुर्गति होगी और नारद की सद्गति।

इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें किसी भी जीव को मारना नहीं चाहिए और पाप कर्मों से बचना चाहिए। तब ही हम स्वर्गगामी बन सकते हैं।

पाठ क्रमांक 29 (नमस्कार मंत्र का चमत्कार)

1. अमर कुमार की माता का नाम क्या था ?

   अमर कुमार की माता का नाम भद्रा था।

2. जब राजा ने अमर कुमार से राज्य करने का आग्रह किया तो उसने क्या उत्तर दिया?

   जब राजा ने अमर कुमार से राज्य करने का आग्रह किया तो उसने कहा कि मै जिसके प्रभाव से बचा हूं उसकी शरण लुंगा।

3. अमर कुमार को नवकार मंत्र के जाप की किसने प्रेरणा दी ?

   रानी चेलना ने

4. राजा श्रेणिक अमर कुमार की बलि क्यों देना चाहता था?

   क्योंकि राजा श्रेणिक विशाल राज प्रासाद बनवाना चाहते थे किन्तु वह ज्योंही पूर्ण होता त्योही ढह जाता इसलिए राजा ने ज्योतिषियो से पूछा कि अब क्या करना चाहिए तो ज्योतिषियो ने कहा कि इसके लिए आपको एक बत्तीस लक्षण वाले बालक की बलि देनी होगी इसलिए राजा श्रेणिक अमर कुमार की बलि देना चाहता था।

5. नमस्कार महामंत्र का चमत्कार कहानी अपने शब्दों में लिखो।

   जैन धर्म का मुख्य मंत्र है नमस्कार महामंत्र। इसके निरंतर जप से अनेक चमत्कार होते हैं।

   एक बार राजा श्रेणिक ने एक विशाल राजप्रासाद बनवाना चाहा लेकिन ज्योंही वह पूर्ण होने जाता तब ढह जाता। इस समस्या से परेशान होकर राजा ने ज्योतिषियों को बुलाकर समाधान मांगा। ज्योतिषियों ने 32 लक्षण वाले युवक की बलि देने को कहा। तब राजा ने पूरे राज्य में ढिंढोरा पिटवाया कि जो कोई अपने बालक की बलि देगा उसे उसके बराबर का सोना मिलेगा | भद्रा नामक स्त्री ने लालच में आकर अपने बेटे को बलि के लिए दे दिया। रानी चेलना को जब इस बात का पता चला तो उन्होंने राजा को बहुत समझाया। होम करने वालों को भी धमकाया। लेकिन किसी ने उनकी बात नहीं सुनी। तब रानी अमर कुमार के पास जाकर बोली - बेटा रो मत! धैर्य रखो! मैं तुम्हें एक मंत्र बताती हूं उसका जप करो। उससे तुम्हारी रक्षा होगी रानी चेलना अमर कुमार को नमस्कार मंत्र सिखाती है। तब अमर कुमार कहता है यह मन्त्र तो मैंने साधुओं से सीखा है। रानी ने कहा तो बस सच्चे मन से इस मंत्र का जप करो। अमर कुमार नमस्कार मंत्र के

जप में लीन हो जाता है। जब होम करने वालों ने उसे अग्निकुंड में ढकेला तब अग्नि ठंडी हो गई और वहां एक सिहासन बन गया। नमस्कार मंत्र के प्रभाव से वे लोग सभी मूर्छित होकर गिर पड़े। राजा को जब मालूम हुआ तब वह दौड़ा दौड़ा आया और वहां की स्थिति देखकर अमर कुमार से राज्य करने के लिए आग्रह किया । अमर कुमार ने कहा मैं जिसके प्रभाव से बचा हूं उस की शरण लूंगा। राज्य से मुझे कोई मतलब नहीं है ।और कुमार ने दीक्षा लेकर अपनी आत्मा का कल्याण किया।